रात्रिक्लास 12/11/68:– कहाँ बैठे हो! तुम बच्चों की लात और तात है ही नई दुनिया की। और यह भी बच्चे जानते हैं हम 5000 वर्ष पहले वा कल्प पहले मिसल फिर से श्रीमत पर अपना दैवी घराणा स्थापन कर रहे हैं। मिशन है ना। यह है ईश्वरीय मिशन। तुमको भी कनवर्ट कर हिन्दुओं से देवता बनाना है। वह हिन्दुओं को क्रिश्चयन बनाते हैं। बौद्धी बहुतों को बौद्धी बनाते हैं। यह फिर है ईश्वरीय मिशन। ईश्वर तो खुद निराकार है। तुम बच्चों को पहले-2 निराकार बनाते हैं। अपन को आत्मा समझो, देह न समझो। खुद सुप्रीम परम आत्मा। तुम हो आत्मा। तुम पार्ट बजाने आते हो। वह सदैव कहाँ रहते हैं इसलिए उनको परमआत्मा कहा जाता है। पहले-2 तुम जानते हो हम घर जावेंगे। घर जाने की मिशन होती नहीं सिवाय इस समय के। तुम समझते हो स्वर्ग में तो पहले थोड़े होते हैं बाकी सभी चले जावेंगे शांतिधाम। तुम सतयुग से लेकर कलियुग अंत तक पार्ट बजाते हो। पुरानी दुनिया में थे, अभी तुम संगम पर हो। वास्तव में सभी संगम पर हैं। है ही संगम का समय; परंतु उनको पता नहीं है। तुम जानते हो। बाप आते ही बीच में हैं। तो तुम अभी समझते हो पुरानी दुनिया का विनाश, नई दुनिया की स्थापना होनी है। संगम सभी के लिए; परंतु जानते नहीं हैं; क्योंकि आसुरी मत पर हैं। तुम जानते हो नई दुनिया बदल रही है। बाप ही संगमयुग पर चेंज करने आते हैं। अभी पुरानी दुनिया पूरी हो नई होनी है। तुम बच्चे नई दुनिया के लिए अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। ब्राह्मण ही अपने लिए नई दुनिया स्थापन कर रहे हैं। अभी हम सो ब्राह्मण हैं। पास्ट में शूद्र थे। दुनिया यही है। अभी तुम संगमयुग पर रहे हो। जानते हो नई दुनिया स्थापन हो रही है। दो युग हैं देवी-देवताओं के। मुख्य तीन धर्म कहें। यह है फाउंडेशन। फिर इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चयन। यह बातें तुम बच्चे ही जानते हो। (झ)ण्डे वाला बाप आया हुआ है। तुम भी सभी को झंडे दिखाते हो। बाप रास्ता बताने वाला, झंडे वाला। वह बिचारे समझते हैं भक्ति से हम भगवान को पावेंगे। भक्ति करते-2 भगवान मिलेगा जो मुक्ति देंगे; परंतु भक्ति में दुःख, ज्ञान में सुख है। यह कोई भी नहीं जानते हैं। भूल गये हैं। इस जन्म को भी

(अधूरी मुरली)